DSSSB TGT & PGT

Part-B

SCHOLAR BATCH

MODERN HISTORY

स्वराजवादी दल

LIVE 25-07-2024 04:00 PM

स्वराजवादी दल

असहयोग आंदोलन की समाप्ति के पश्चात किस तरह के कार्य किये जाएं कि भारत में राष्ट्रीयता की भावनाएं बनी रहे, इस बात को लेकर कांग्रेस के अंदर दो विचारधाराएं उत्पन्न हुई।

(1) परिवर्तनकामी

a) चितरंजन दास
b) मोतीलाल नेहरू
c) विट्ठलभाई पटेल
d) हकीम अजमल खां

(2) परिवर्तन विरोधी

a) चक्रवर्ती राज गोपालाचारी
b) डॉ. राजेन्द्र प्रसाद
c) वल्लभभाई पटेल
d) हसन इमाम

- परिवर्तनकामियों का यह मानना था कि 1919 के अधिनियम के अंतर्गत नवम्बर 1923 में होने वाले दूसरे चुनाव में कांग्रेस को भाग लेना चाहिए, इसलिए असहयोग आंदोलन के निर्धारित चुनाव के बहिष्कार के कार्यक्रम में परिवर्तन लाया जाना चाहिए।

- परिवर्तन विरोधियों का यह कहना था कि चुनाव के बहिष्कार के कार्यक्रम में किसी भी प्रकार का परिवर्तन न हो और राष्ट्रीयता की भावनाओं कोबनाए रखने के लिए गांधीजी के रचनात्मक कार्यक्रम पर बल दिया जाए।

- दोनों का उद्देश्य भारत में राष्ट्रीयता की भावनाओं को बनाए रखना था, किंतु इसके लिए अपनाए जाने वाले साधन को लेकर भिन्नता थी। दिसम्बर 1922 में गया में वार्षिक कांग्रेस अधिवेशन आयोजित हुआ, जिसमें अध्यक्ष चितरंजन दास ने चुनाव से सम्बंधित एक प्रस्ताव रखा|

(कांग्रेस का दूसरा विभाजन :- गया अधिवेशन)

- 1921 के अहमदाबाद कांग्रेस अधिवेशन के अध्यक्ष पद पर चितरंजन दास का चुनाव हुआ था; परंतु उस समय उनके जेल में होने के कारण इस अधिवेशन की अध्यक्षता हकीम अजमल खाँ ने की थी ।

- 1922 में गया अधिवेशन का अध्यक्ष एक बार फिर से सी. आर. दास को बनाया गया।

- इस अधिवेशन में उनके द्वारा रखे गए 'चुनाव में भागीदारी से संबंधित' प्रस्ताव को खारिज कर दिया गया।

- चितरंजन दास ने तब अध्यक्ष पद से त्यागपत्र देकर इलाहाबाद 1 जनवरी 1923 को एक 'अखिल भारतीय कांग्रेस- खिलाफत स्वराज्य पार्टी का गठन किया, जिसे संक्षेप में 'स्वराज्य दल' कहकर पुकारा गया।

अध्यक्ष – चितरंजन दास

सचिव-

- मोतीलाल नेहरू
- वी० एन. समसले
- विट्ठलभाई पटेल
- चौधरी खली कुज्जमा

सदस्य

- **उद्देश्य** - असहयोग आंदोलन से जनता में उत्पन्न उत्साह को बनाए रखना तथा सरकार का प्रत्येक संभव तरीके से विरोध करना। इस दल के नेताओं का विचार था कि इससे सरकार के विरुद्ध आरंभ किया गया जनांदोलन शिथिल नहीं होगा और वे जनहित में सरकार को कानून पारित कराने के लिए बाध्य कर सकेंगे।

- सितम्बर 1923 में दिल्ली में मौलाना अबुल कलाम आजाद की अध्यक्षता में सम्पन्न कांग्रेस के विशेष अधिवेशन में स्वराजवादियों को चुनाव में भागीदारी का अधिकार प्रदान कर दिया गया। लेकिन कांग्रेस ने इस चुनाव में अपनी ओर से कोई भी जिम्मेदारी लेने से इंकार कर दिया।

- इन स्वराजवादियों से यह उम्मीद की गई कि वे भी रचनात्मक कार्यक्रम को बढ़ावा देने में पूरी तल्लीनता से कार्य करेगे।

- इसी विशेष अधिवेशन की अध्यक्षता कर मौलाना अबुल कलाम आजाद आज तक के इतिहास में कांग्रेस की अध्यक्षता करने वाली सबसे कम उम्र के व्यक्ति बने।

- इस विशेष अधिवेशन में लिए गए निर्णय पर, दिसम्बर 1923 के काकीनाडा (आंध्र प्रदेश) के वार्षिक कांग्रेस मुहर लगा दी। इस की अध्यक्षता मौलाना मुहम्मद अली ने किया था।

स्वराज्यवादी एवं चुनाव -

1919 के अधिनियम के प्रावधानों के अंतर्गत कुल तीन चुनाव हुए थे।

- नवम्बर 1920
- नवम्बर 1923
- नवम्बर 1926

- असहयोग कार्यक्रम में शामिल चुनाव के बहिष्कार कार्यक्रम के अंतर्गत कांग्रेस ने नवम्बर 1920 के चुनाव में शामिल होने से इंकार कर दिया। सभी कांग्रेस उम्मीदवारों ने चुनाव का बहिष्कार किया था।

- इस चुनाव में उदारवादियों के 'नेशनल लिबरल फेडरेशन' तथा अन्य लोगों ने भाग लिया।

- 1922 में असहयोग आंदोलन की वापसी के पश्चात् नवम्बर 1923 में चुनाव में कांग्रेस ने तो नहीं, परंतु उसके एक घटक दल "स्वराज्य पार्टी ने भाग लेने की घोषणा की।

- नवम्बर 1923 के चुनाव में स्वराजवादियों ने काफी महत्वपूर्ण जीत हासिल की

- केन्द्रीय विधानसभा के 105 सदस्यों में से 42 सदस्य स्वराजवादियों के निर्वाचित हुए। इस प्रकार केन्द्र में उनकी जीत रही।

- प्रांतीय विधान सभाओं में मध्य प्रांत में उनकी विजय सर्वाधिक थी, जहा कुल 54 स्थानों में 40 स्थान पर विजयी रह कर स्पष्ट बहुमत हासिल की।

- बंबई के कुल 86 स्थानों में 32 पद, बंगाल के कुल 111 स्थानों में 36 पद, संयुक्त प्रांत के कुल 101 स्थानों में 31 पर स्वराजवादी विजयी ' रहें, अर्थात इन स्थानी में यद्यपि वे बहुमत हासिल नहीं कर सके, तथापि चुनाव की तैयारी के कम समय को देखते हुए उनका यह शानदार प्रदर्शन था। अन्य प्रांतों में इनकी सफलता कम रही।

- उनके इस विशिष्ट उपलब्धि को देखते हुए उन्हें 'कांग्रेस का संसदीय कहकर पुकारा जाने लगा। नवम्बर 1926 के चुनाव में इनका प्रदर्शन ख़राब रहा , जिसके करण निम्नलिखित थे –

  - 1925 के चुनाव में चितरंजन दास की मृत्यु हो गई, जिससे संगठनके नेतृत्व पर बुरा प्रभाव पड़ा

- 1923 के चुनाव में जिन्हें टिकट मिला था, 1926 के चुनाव उन्हें फिर से नहीं दिया गया, तो उन्होंने स्वतंत्र उम्मीदवार के रूप में चुनाव में भागीदारी की। जनता में तब उनके सत्तालोलुप होने का संदेश गया।

- पार्टी के भीतर सांप्रदायिक ताकतों का मजबूत होना

- स्वराज्य पार्टी के सदस्यों के द्वारा विभिन्न राजकीय पदों को स्वीकार कर लेना, जैसे- 1925 में विट्ठलभाई पटेल के द्वारा केन्द्रीय विधान सभा के अध्यक्षपद को स्वीकार कर लिया जाना|
- कुछ प्रमुख स्वराजवादियों को 'इस्पात सुरक्षा समिति की, तो मोतीलाल नेहरू को 1925 में भारतीय सेना के भारतीयकरण हेतु गठित 'इंडियन सैंडहर्स्ट कमेटी, था 'स्कीन समिति की सदस्यता दे दी।'